समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 17 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

भारत को घेरने की चीनी साजिश

—— प्रो. सतीश कुमार

डोकलाम से लेकर बाड़ा होती और लद्दाख तक भारतीय सीमा पर चीन का दंमी रवैया उसकी विस्तारवादी नीयत व शक्ति के दंम का परिचायक तो है ही इससे बड़ी बात यह है वह मैकमोहन लाईन को मानता ही नही जिसे लेकर सन् 1914 में तत्कालीन ब्रिटिश हुकुमत और तिब्बत के बीच समझौता हुआ था। विश्व में चीन ही एक ऐसा देश है जो आज वर्तमान युग में भी विस्तारवाद की नीति के मोह को नही छोड़ पा रहा है। इस का परिणाम यह हुआ है कि उसकी इस नीति से तेईस देश चिन्तित हैं। इन देशों के साथ वह भू–भाग को लेकर अपने दावे जताता रहा है। इनमें चौदह देशों से सटी तो उसकी सीमायें है लेकिन चीन के भू–भाग से लगभग एक हजार कि.मी. दूर स्थित इंडोनिशिया, मलेशिया, और बूनई के समुद्री हिस्सों पर भी उसकी ऑखें लगी हुयी है जबकि अंतराष्ट्रीय मानक 200 कि.मी. ही होता है। आर्थिक गलियारें के कारण वह अब किसी भी तरह पाकिस्तान को भी हथिया लेना चाहता है। इसके बाद उसकी दृष्टि हिन्द महासागर पर भी है। सिक्किम सीमा पर विवाद इसी विस्तारवादी मानसिक श्रंखला की ओर बढ़ता एक कदम है।

— संपादक

गत दिनों चीन ने भारत से धमकी भरे स्वर में कहा, कि अगर वह अपने चाल–चलन में परिवर्तन नहीं करता तो उसे 1962 में जो हुआ, उसे याद कर लेना उचित होगा। चीन की यह बयानबाजी हैरान करती है। साफ है कि मद में चूर चीन अपना संतुलन खो इस तरह की बातें कर रहा है। इसके पीछे दरअसल एक वजह है। सिक्किम के जिस इलाके में चीन के साथ तनाव जारी है, वहां भारतीय सेना की सामरिक, भौगोलिक और सैन्य स्थिति काफी मजबूत है। भारत ने चीन की धमकियों का करारा जवाब दिया है। केन्द्रीय रक्षा मंत्री अरूण जेटली ने कहा कि 2017 का भारत 1962 का भारत नहीं है और न ही वह किसी देश से डरने वाला है। इधर सेना ने कहा है कि तिब्बत के विवादास्पद इलाके चुंबी से सटे सिक्किम गलियारे में 3,000 सैनिको की मौजूदगी की बात मनगढ़ंत है। सिक्किम सेक्टर की संवेदनशील जगहों पर भारतीय सेना पहले से ही तैनात है, कोई नया परिवर्तन नही हुआ हैं। चुंबी घाटी का हिस्सा, डोकलम अत्यंत संवेदनशील इलाका है। दरअसल पिछले 7 दशक से चीन गलत दलीलों के साथ इस घाटी क्षेत्र को अपना हिस्सा बताता आ रहा है। जबकि यह भूभाग भूटान का इलाका है। भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों को बाकी देश से जोड़ने वाला अहम सिलीगुड़ी गलियारा इस घाटी से नीचे महज 50 किलोमीटर की दूरी पर है। भारत के सामरिक हितों के साथ आंतरिक सुरक्षा के लिहाज से भी यह इलाका बेहद संवेदनशील है। वस्तुतः यह घाटी तिब्बत, भूटान और भारत

की सीमाओं पर स्थित है। भारत और चीन के बीच नाथू–ला दर्रा और जेलन दर्रा यहां खुलते हैं। इस संकरी घाटी में सैन्य गतिविधियां बहुत मुश्किल हैं। इसे 'चिकेन नेक' भी कहा जाता है। डोकलम सिक्किस के नजदीक वह क्षेत्र है जिसे चीन ने डोंकलांग नाम दिया है। इस क्षेत्र को लेकर भूटान और चीन के बीच विवाद है। देखने की बात यह है कि आखिरकार चीन ने ऐसा बयान क्यों दिया ? यह सर्वथा सच है कि भारत – भूटान संबंध अपनी तरह के अनूठे हैं। 1947 से लेकर 2007 तक दोनों देश 50 वर्षीय मैत्री संधि से बंधे हुए थे। 2007 के बाद भी पुरानी व्यवस्था को बनाए रखा गया। भूटान की रक्षा और विदेश नीति में भारतीय मदद शामिल रहती है, जबकि चीन और भूटान के बीच किसी तरह के कूटनीतिक संबंध नही है। 1996 में चीन ने भूटान के सामने कई बाधाएं डाली थीं 2012 में भी ऐसी कोशिश की गई, लेकिन सफलता नही मिली।

अब है नई नीति

चीन की बौखलाहट का असल कारण है, भारत–अमेरिका संबंध। जब कभी भी दोनों देशों के बीच नैकट्य प्रकट होता है, चीन आनन–फान्न ऐसे बयान देने लगता है जिससे भारत भयभीत हो जाए। यह काम उसने पहली बार नहीं किया है। लेकिन इस बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हिमालय फ्रंटियर में बदलाव की नींव अपनी प्रथम विदेश यात्रा के साथ ही रख दी थी, जब उन्होने भूटान की यात्रा की थी। मोदी सरकार ने महज राष्ट्रीय हित को सामने रखा। इसके अंतर्गत भारत ने न केवल हिमालयी देशों में अपनी सुरक्षा को चाकचौबंद किया, बल्कि चीन से आर्थिक संबंधों को भी नई ऊंचाई पर ले जाने की शुरूआत की। चीन में तेंग श्याओ ने 70–80 के दशक में चीन की विदेश नीति को विचार विशेष से मुक्त कर राष्ट्रीय हित की तरफ मोड़ दिया था। भूटान और नेपाल में एक नई शुरूआत के साथ अपनी विदेंश नीति को भारत सरकार ने नया आयात देते हुए देश की खोई साख को नए सिरे से दुनिया के सामने रखने की कोशिश की है। चीन ने पिछले 7 दशक में भारत को डराने, घेरने और तंग करने के लगातार प्रयास किए है। मनमोहन सिंह सरकार के कार्यकाल में चीन का दबाव इतना बढ़ गया था कि रक्षा और विदेश मंत्रालय अपनी अलग–अलग ढपली बजाते दिखते थे। मोदी की सोच ने

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

नमाज नही पढता था इसलिये मार दिया

पाकिस्तान के अब्दुल वली खान विश्वविद्यालय, मरदान में पत्रकारिता के एक छात्र मशाल खान को अन्य छात्रों ने इसलिये मार दिया क्यों कि उस पर 'सेक्यूलर' और 'लिबरल' होने का संदेह था। क्यों कि शुक्रवार को वह मस्जिद जाकर नमाज नही पढता था। बस, इस संदेह और अपराध में दर्जनों मुस्लिम छात्रों की भीड़ ने उसे गोली मार दी, नंगा कर उसके शरीर को क्षत–विक्षत किया, फिर कचरे की तरह दूसरी मंजिल से से नीचे फेक दिया। ध्यान रहे, सभी समाचारों के अनुसार मशाल खान ने न तो न प्रोफेट मुहम्मद पर कुछ कहा था,और न ही इस्लाम की निंदा की थी। केवल वह स्वयं इस्लामी विचारों से नही चलता था। बस , इसलिये उसे मार ड़ाला गया। यानी, इस्लाम की शान के लिये एक मुस्लमान ने दूसरे मुसलमान को मार ड़ालां। इस्लाम का मूल सिद्धांत किसी अन्य विचार धारा को स्वीकार न करना है। उन मुस्लमानों को भी बर्दास्त न करना हैं, जो पूरी तरह से इस्लाम से नही चलते। यह खुद उसके प्रोफेट द्वारा दिया गया 'तकफीर' का सिद्धांत है। जिसके अनुसार ऐसे मुसलमानों को खत्म करना हैं जो काफिर हो गये हैं या काफिर जैसा व्यवहार करता हैं। इसी सिद्धांत को इस्लामी स्टेट जम कर लागू कर रहा हैं। यदि पाकिस्तान के उक्त कानून की तरह ईसाई,बौद्ध,हिन्दू आदि भी वैसा तय करने लगे कि ईसा या बुद्ध या चैतंय महाप्रभु के अलावा किसी को पैगंबर मानना मृत्यु दण्ड़ का अपराध है तो मुसलमान क्या करेंगे..? तब उन्हे या तो ईसाई,बौद्ध, आदि बनना पड़ेगा, या फिर मरना पड़ेगा। क्या ऐसे कानून पागलपन नही कहलायेंगे. .? लेकिन जो चीज बौद्ध या ईसाई समाज में अकल्पनीय हैं, उसे मुसलमान अपने समाज में क्यों उचित ठहराते हैं ?

ऐसा होता हैं सेक्यूलर

– सेकूलर वह आदमी होता हैं जिसका नाम हिंदुओ जैसा तो होता हैं लेकिन उसे अपने हिन्दु होने पर शर्मिन्दगी महसूस होती हैं।

– सेकूलर वह आदमी होता हैं जो आवारा कुत्तों को शहर से बाहर निकालने पर प्रशासन को इंसानियत का विरोधी करार देता है लेकिन खुले आम गाय काट कर खाने को अपना अधिकार समझता हैं।

– सेकूलर वो होता हैं जो छाती कूट–कूट कर फेसबुक और व्हाट्सअप पर मार्मिक अपील करता है कि दिवाली पर प्रदूषण न फैलाये ,पटाखें न जलायें। लेकिन ईद पर एक बार भी नही बोलता कि जानवरो को बिना काटे ईद मनायी जाये।

– सेकूलर वह होता हैं जो आतंकवादी को सजा मिलने पर उसके बचाव में खड़ा हो जाता हैं जबकि देश के सैनिक के लिये बोलता हैं कि सैनिक तो होते ही हैं मरने के लिये।

– सेकूलर वो होता है जो गाय को काट कर खाने वाले का समर्थन करता हैं और गौ–रक्षकों को गुण्ड़े कहता हैं।

– सेकूलर वो होता हैं जिसे राष्ट्रीयगान या राष्ट्रीयगीत गाना साम्प्रदायिक लगता हैं। और क्या बताऊँ कि सेकूलर क्या होता हैं, बस इतना समझ ले कि इंसान की शक्ल में जो भेड़िया जैसा जो होता है, वो सेकूलर होता हैं।

विदेशी कम्पनियों की धोखा–धड़ी

– नेशले कंपनी खुद मानती है कि वे अपनी चोकलेट किट–केट में गाय का रस मिलाते हैं।

– मद्रास उच्च न्यायालय ने 'फेयरं ऐण्ड़ लवली' कंपनी पर जब मुक्दमा किया था, तब कंपनी ने खुद माना था कि हम क्रीम में सूअर की चर्बी का तेल मिलाते हैं।

– विक्स नाम की दवा पर यूरोप में प्रतिबंध हैं। वहॉ इसे जहर घोषित किया गया हैं, पर भारत में सारा दिन टी वी पर इसका विज्ञापन आता रहता है।

– लाइफ बॉय साबुन जानवरों को नहलाने वाला साबुन हैं। यूरोप में इससे कुत्ते नहाते हैं जबकि भारत में करोड़ो लोग रगड़–रगड़ कर नहाते हैं।

बूस्ट, काम्प्लान, हॉर्लिक्स, माल्टा व प्रेटीनेक्स आदि टॉनिक मुंगफली के तेल से बनते हैं। मतलब जो मूंगफली का तेल निकालने के बाद जो कचरा बचता है, जिसे जानवरों को दिया जाता हैं खाने के लिये उससे तथाकथित टॉनिक बनायी जाती हैं।

– सावधान मित्रों अगर खाने पीने के चीजों के पैकेटों पर निम्न कोड़ लिखे हैं तो उसमे ये चीजें मिली हुई हैं– ई 322–गाय का मांस, ई422– एल्कोहल का तत्व और हानिकारक रसायन ई471– गाय का मांस और एल्कोहल का तत्व, ई481– गाय और सुअर का मांस ई627–घातक कैमिकल ई631– सुअर की चर्बी का तेल।

शबे–कद्र पर उप–अधीक्षक को पत्थरों से मार दिया

कश्मीर में रमजान के आखिरी जुमे (शुक्रवार) से पहले की रात को इस्लाम के बन्दों ने उप पुलिस अधीक्षक मोहम्मद अय्यूब पंडित को पत्थरों से बड़ी बर्बरता से मार दिया। अलगाववादी मीर वायज फारूख की सुरक्षा में तैनात डी. एस.पी उस समय सादा वस्त्रों में थे तथा श्रीनगर की जामिया मस्जिद में नमाज पढ़ कर बाहर निकले थे। रमज़ान के आखिरी शुक्रवार से पहले की रात शबे–कद्र कहलाती है तथा अत्यंत पवित्र मानी जाती है। 22 जून शुक्रवार की मध्य रात्रि में मीर वायज फारूख जामिया मस्जिद में भाषण दे रहे थे तथा उनकी सुरक्षा में तैनान पुलिस उप अधीक्षक अय्यूब मस्जिद के द्वार पर खड़े थे। उसी समय मस्जिद के बाहर खड़ी भीड़ ने उन पर पत्थर फेकने शुरू कर दियें। वे कुछ समझते इससे पहले लोगों ने उनको भीड़ में खीच लिया और पत्थरों से पुलिस अधिकारी को मार दिया। उन्हें मारने के बाद श्रीनगर के नर–पिशाच उनके शव को घसीटते रहें। अखलाक के मारे जाने (ढाई साल पहले) पर आसमान सर पर उठाने वाले देखें अब क्या करते हैं ?

सुभाषित

ऊँ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।

हम दोनों (गुरू और शिष्य) की प्रभु रक्षा करें। हम दोनों का खान–पान साथ–साथ हो (देश में कोई भी भूखा न रहे) हमारा पठन–पाठन उज्जवलित एवं प्रदीप्त करने वाला हो। हम परस्पर कभी द्वेष नही करें।

बच्चों को आत्मनिर्भर भी बनने दे

प्रत्येक माता– पिता को अपने बच्चों के भविष्य की चिंता होती है, बच्चों के पालन– पोषण के लिए वे बहुत सजग भी रहते हैं। लेकिन जब यह सजगता जरूरत से ज्यादा हो जाती है, जिसके कारण बच्चों की स्वतंत्रता ही प्रभावित होने लगती है तो इसे आजकल की भाषा में 'पैराशूट पैरेंटिंग कहा जाता है पैराशूट का अभिप्राय एक ऐसी छत्रछाया से है, जो कि सर्वांगीण सुरक्षा प्रदान करना हैं। यहाँ उस शब्द के प्रयोग का उद्देश्य ऐसे अभिभावकों से है, जो अपने बच्चों को आगे बढ़ाने उनकी मदद करने के लिए उनके हर कार्यों को स्वयं करना प्रारंभ कर देते है, जिससे धीरे–धीरे बच्चों में स्वावलंबन की भावना ही समाप्त हो जाती है। इसलिए आजकल उस तरह की अभिभावकवृत्ति के लिए 'पैराशूट पैरेंटिंग' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा है। 'पैराशूट पैरेंटिंग शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1961 में डॉ. हेम गिनाट्स की पुस्तक 'बिट्वीन पैरेंट्स एंड टीनेजर्स' में हुआ और फिर यह इतना लोकप्रिय हुआ कि सन् 2011 में डिक्शनरी में भी इसे स्थान देना पड़ा। पैराशूट पैरेंटिग यानी ऐसे माता– पिता जो अपने बच्चों के आस–पास पैराशूट की भाँति मँडराते रहते हैं। उन्हें जरूरत से ज्यादा नियंत्रित करते हैं, उन पर बहुत ज्यादा ध्यान देते हैं, उन्हे बहुत ज्यादा सुरक्षित रखते हैं। बदलते दौर में बच्चों को सिखाने, उनकी देख–भाल करने, उनका मार्गदर्शन करने के लिए बच्चों के हर काम, जैसे–स्कूल के टेस्ट, दोस्त चुनना, घूमने जाना, खेलना आदि उनके सभी कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं।, उनके साथ–साथ रहते हैं। उनके साथ–साथ रहते हैं। लेकिन बच्चों के साथ हमेशा रहनें उन्हें किसी प्रकार की परतंत्रता की भावना पनप जाती है और इसका उनके व्यक्तित्व –विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे कई कारण होते हैं, जिनकी वजह से माता–पिता पैराशूट पैरेंट्स बन जाते हैं, जैसे–(1) जो माता–पिता अपने बच्चों को हर क्षेत्र में आगे देखना चाहते हैं, उनके मन में अपने बच्चों की सफलता, असफलता को लेकर ज्यादा भय होता है, इसलिए वे उनके साथ बने रहते हैं। तेजी से बढ़ती प्रतिस्पर्धा के इस युग में उनके बच्चे कहीं पीछे न रह जाएँ, इस वजह से वे उनके पीछे पड़े रहते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि उनके ऐसा करने से उनका बच्चा सफल हो जाएगा। (2) ऐसे अभिभावक, जो यह समझते हैं कि आने वाला समय उनके बच्चों के लिए अधिक चुनौतियों से भरा है और उन्हें अपने बच्चों की काबिलियत पर विश्वास नहीं होता, इसलिए वे भी अपने बच्चों को लेकर ज्यादा परेशान रहते हैं। वे अपने बच्चों के साथ इसलिए लगे रहते हैं, ताकि उनका बच्चा असफल होने पर कही अवसादग्रस्त न हो जाए। तीसरा कारण–(3) कुछ ऐसे भी अभिभावक होते हैं, जिन्हें अपने बचपन में वो सब नही मिला, जो वे पाना चाहते थे, इसलिए अब वो सब कुछ अपने बच्चों को देना चाहते हैं, जो उन्हें नही मिला। जिन माता–पिता को अपने बचपन में उपेक्षा मिली, वो भी अपने बच्चों को अधिक प्यार, अधिक समय देकर उस उपेक्षा की क्षतिपूर्ति करना चाहते हैं। (4) दूसरे अभिभावकों को अपने बच्चों के कामों में व्यस्त देखकर भी कई अभिभावकों को लगता है कि वे भी अपने बच्चों कें कामों में हस्तक्षेप करें। (5) कई अभिभावकों को यह चिंता हो जाती है कि उनके बच्चों का भविष्य कैसा होगा? अपनी इस चिंता को दूर करने के लिए भी वे अपने बच्चों के साथ उनके काम में सहयोग करते रहते हैं। पैरेंटिग से जहाँ एक ओर बच्चे के अंदर आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता की भावना नहीं पनप पाती, वहीं ऐसे बच्चे अपने किसी भी कार्य के लिए दूसरों पर अपनी निर्भरता दरसाते हैं। किसी भी तरह की परिस्थितियों का स्वयं सामना करने से झिझकते हैं, चुनौतियों को सहज स्वीकार नहीं करते और न ही स्वतंत्र निर्णय ले पाते हैं। माता–पिता अपेक्षाओं पर खरा उतरना ऐसे बच्चों के लिए अति आवश्यक होता है और इसमें सफलता न मिलने पर वे अवसाद में चले जाते हैं। ऐसे बच्चे सफल होने पर भी सफलता का श्रेय कभी स्वयं नही ले पाते, क्योकि सफलता उन्हें अपने माता–पिता के कारण मिलती है। एक तरह से पैराशूट पैरेंटिंग के कारण बच्चों का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व विकसित नहीं हो पाताः क्योंकि ये अभिभावक अपने बच्चों को कोई काम करने ही नहीं देते और उनके काम करने से पहले ही वे उनका काम कर देते हैं। जिस तरह से किसी भी चिड़िया के बच्चों को उडना है तो उड़ने का प्रशिक्षण तो चिड़िया देती है, लेकिन उड़ने के लिए उसके बच्चे को स्वयं पंख फड़फड़ाना होता है। यदि चिड़िया अपने बच्चों के पंखो में चोंच न मारे, उन्हे उड़ने के लिए न धकेले, तो उसके बच्चे कभी उड़ न सकेंगे। ठीक इसी तरह यदि पैरेंटिंग यानी बच्चों के पालन–पोषण के तरीकों में यदि माता–पिता, बच्चों की हर समय मदद करते हैं, उनके पीछे–बड़े कार्यों को स्वयं करते हैं तो ऐसा करने से उनके बच्चे कभी अपना कार्य सही ढंग से नही कर पाते है और अपने कार्यों के लिए अपने सहयोगियों पर ही निर्भर रहते हैं। इसलिए पैराशूट पैरेंटिंग एक तरह से अतिवाद है, जिसमें माता–पिता अपने बच्चों की जरूरत से ज्यादा देख–भाल करते हैं। यह जरूरी है कि माता–पिता उपने बच्चों का पूरा ध्यान रखें, उनकी जरूरतों का ध्यान रखें, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखें कि उनका बच्चा जीवन की किसी भी तरह की राह पर आगे बढ़ने के लिए आत्मनिर्भर बन सके, सशक्त बन सके, सक्षम बन सके और यह तभी संभव होगा, जब माता–पिता अपने बच्चों को कष्ट सहना, मेहनत करना हार मिलने पर सफलता के लिए पुनः प्रयास करना जैसे गुणों को सिखाएँगे। जिस तरह बड़े पेड़ की छाँह में दूसरे अन्य पौधे विकसित नहीं हो पाते व विकसित होने के लिए उन्हे धूप यानी चुनौती रूपी पोषण की जरूरत होती है और ऐसा छाँह न होने पर ही संभव है, उसी तरह जब तक बच्चों के माता–पिता उन पड़ने वाले अति देख–भाल के भाव को नहीं हटाएँगे, उन्हे जीवन में स्वयं मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित नही करेंगे, तब तक उनके बच्चे स्वयं आगे नही बढ़ पाएँगे और न ही सफल जीवन जी पाएँगे। इसलिए यह जरूरी है कि बच्चों के स्ततंत्र व्यकित्व के विकास के लिए उन्हें थोड़ा सहारा तो दिया जाए, लेकिन साथ ही उन्हे बिना सहारे के भी चलना सिखाया जाए।

आंध्र उच्च न्यायालय ने कहा–गोवध से बड़ा कोई पाप नहीं

राजस्थान उच्च न्यायालय के बाद आंध्र प्रदेश और तेलंगाना उच्च न्यायालय ने भी गाय को पूजनीय बताया है तथा गोहत्या पर कड़ी सजा का आदेश दिया है। गत 10 जून को एक पशु व्यापारी की याचिका पर निर्णय देते हुए न्यायमूर्ति बी शिवशंकर राव ने कहा कि गाय का हमारे समाज में माता का और इसलिये भगवान का स्थान है और इसकी हत्या करने वाले को जमानत भी नहीं दी जा जानी चाहिये। उक्त पशु – व्यापारी ने केन्द्र सरकार के नये कानून के विरोध में याचिका प्रस्तुत करते हुए यह तर्क भी दिया था कि गोहत्या मुसलमानों का मजहबी अधिकार है। उच्च न्यायालय ने इसे नही माना और कहा कि इस्लाम में गोवध की बात नही कही गई है। विद्वान न्यायाधीश ने वेद, उपनिषद और पुराणों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत में गाय अवध्य है। अर्थात् गाय का वध नही किया जा सकता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

पंड़ित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष (2016–2017) गरीब कल्याण वर्ष के रूप में देश भर में मनाया जा रहा हैं। केन्द्र और प्रदेश सरकार ने इस उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रमों का समायोजन किया है। स्थान–स्थान पर उनके स्मृति स्मारक बनाये जा रहे हैं। संबधित रेल्वे स्टेशन, हवाई अड्डों का नाम उनके नाम करण, विश्वविद्यालयों में उनके सिद्धांत पर गवेष्णा प्रकोष्ठ, उनके दर्शन एकात्म मानव वाद और अन्त्योदय पर विस्तृत चर्चाओं, भाषणों की श्रृंखलाओं के साथ–साथ अनेक भवनों, कार्यालयों का उनके नाम पर नामकरण विचाराधीन हैं। उनके नाम पर एक अंतराष्ट्रीय पुरूष्कार देने का भी संकल्प किया गया हैं। केन्द्र सरकार ने गृहमंत्री की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन इन सब कार्यक्रमों के समायोजन के लिये किया हैं। केन्द्र सरकार ने इस निमित 100 करोड़ की राशि का प्रावधान किया हैं। इसका 80 प्रतिशत स्थायी स्मारकों और प्रतिशत साहित्य प्रकाशन, भाषणों–गोष्ठियों पर खर्च किया जायेगा। दीनदयाल जी क्या थे, वे कैसे थे, इसका अध्ययन करें तो आपको 'कथनी और करनी' में कोई अंतर न रखने वाला नेता दिखाई देगा। सबको राटी के दो कौर मिल चुके हैं, इसका विश्वास कर लेने के बाद ही कुछ खाने के लिये बैठने वाला परिवार प्रमुख उनके रूप में यहा मिलेगा। थके – मांदे बच्चे के पॉव दुखने लगे हो तो उनके पास बैठकर अपने हाथों से दबाने–सहलाने की ममता रखने वाला ही अनुशासन का कड़ाई से पालन करा सकता है। यह बात अपने आचरण में दिखने वाले वे भारतीय संस्कृति के आदर्श प्रतिनिधि हैं। प्रगति के नित्य नये चरण पार करते समय अपने कुल, कुलधर्म तथा कुलाचर को ना भुलाने वाला, उसके बारे में गर्व अनुभव करने वाला और जिस पर उनके कुल को भी गर्व हो, ऐसा यह कुलभूषण व्यक्तित्व हैं।

क्या हैं यह कुल? क्या हैं उसका कुलधर्म और कुलाचार? दीनदयाल उपाध्याय राष्टीय स्वयं सेवक संघ के आम्रवृक्ष में लगा एक सुमधुर फल हैं। जैसे लोक मान्य तिलक मूलत; राजनीतिज्ञ या राजनेता नही थे, किन्तु देश की आवश्यकता के नाते उन्होने राजनीति अपनाई। पंड़ित जी देश की आवश्यकता के नाते ही राजनीति में उतरे थे। उनके समूचे जीवन में संघ के ही मूल्य साकार हुये थे। इसका भी कारण यही था। उनके सामने एकाध चुनाव नही था, वरन् सारे समाज की पुर्नरचना करने का अजस्त्र काम था। 1,000 वर्ष के मुसलमानी आक्रमण तथा 150 वर्ष तक रही अंग्रेजों की सत्ता के कारण छिन्न–भिन्न हुये समाज को उसके अपने सभी मूल्यों के साथ फिर से खड़ा करने का प्रचण्ड़ दायित्व थी दीनदयाल जी ने उठाया था। राजनीति उसका एक भाग मात्र उनकी राजनीति का सिंहावलोकन एवं विश्लेषण करते समय और उनके उद्देश की खोज करते समय इस पृष्टभूमि का विचार करना अपरिहार्य हैं। भारतीय जन संघ की स्थापना दिल्ली में 21 अक्टूबर 1951 को हुई थी। पं. दीनदयाल उस समय संघ के प्रचारक थे। श्री गुरूजी ने ड़ॉ. मुखर्जी कें आग्रह पर संघ के कुछ प्रचारक जन संघ में दिये थे, जिनमे दीनदयाल जी प्रमुख थे। इस सम्मेलन में पंड़ित जी ने भाग तो नही लिया था पर मेरी पं. जी से पहली व्यक्तिगत मुलाकात 1953 में कानपुर के अधिवेशन में हुई थी। चूकि जनसंघ एक नवोदित दल था। हमारे मन में यहॉ उत्सुक्ता थी, वही संघ के नाते सहोदर होने के कारण पंड़ित जी के प्रति मन में आदर का भाव था। 1953 से 1968 में उनके देहावसान तक राजनीतिक जीवन में उनसे प्रत्यक्ष भेट करने, अनेक विषयों में उनसे चर्चा करने और उनके साथ होने वाले अपने तात्कालिक मतभेदों को व्यक्त करने के अनेक अवसर मुझे मिले। मैने प्रत्येक बार उनके अकाट्य तर्को को अनुभव किया। एक दृष्टि से देखा जाये तो यह मेरे लिये राजनीतिक प्रशिक्षण था।

पं. दीनदयाल ने बहुत अल्पावधि में देश की राजनीति में नया विचार प्रस्तुत किया है। कांग्रेस के प्रादेशिक राष्ट्रवाद, साम्यवादियों के मार्क्सवादी साम्यवाद तथा समाजवादियों के लोकतंत्रीय समाजवाद के साथ ही उन्होने जनमानस में उन 'वादों' के विकल्प में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद , आर्थिक विकेन्द्रीकरण और शिखर तल से धरातल तक जाने वाली जनपद लोकतंत्रीय प्रणाली का बीज बोया और एकात्म मानवाद को परिलक्षित किया। ऐसी उनकी वैचारिक उड़ान तथा उनका संगठन कौशल चकित करने वालाा था। उन्होने इस सत्य का आकलन भलि भॉति कर लिया था कि बिना विचार के कृति अंधिक होती हैं और कृति के बिना विचार पंगू।

इसलिये उनकी गति एकात्म मानव दर्शन से लेकर कच्छ समझौते के विरोध में आयोजित विराट प्रदर्शन तक अप्रतिहत थी। वे विचारक थे और अपने विचारों को अनुयायियों में संक्रमित करने का असाधारण कौशल उनमें था। वे दार्शनिक एवं शिक्षक अर्थात् गुरू थे।समर्थ रामदास गुरू के संबंध में कहते हैं कि – पारस लोहे को सोने में बदल देता हैं, किन्तु स्पर्श मात्र से किसी को सोना बना देना यह गुण वह किसी को नही देता हैं। उस गुण को वह अपने पास ही रखता है। किन्तु सद्गुरू स्वयं उपदेश तो देता ही हैं, साथ ऐसा उपदेश अन्य को देने का अधिकार भी वह अपने शिष्यों को देता हैं। यही दीनदयाल जी के कृतित्व का रहस्य हैं जिसके कारण वे अल्पावधि में ही इतना देशव्यापी, विशाल और आचार–विचारों के साथ निष्ठावान रहने वाला संगठन खड़ा कर सके।

पृष्ठ क्रं.1 का शेष भाग

'ढाक के तीन पात' वाली विदेश नीति को बदला और एक नई सामरिक सोच विकसित की। इस सामरिक सोच के अंतर्गत भूटान, नेपाल के रास्ते तिब्बत तक परिवर्तन दिखाई देगा। चीनी चक्रव्यूह की काट पर काम भी शुरू हो चुका है। भारत–अमेरिका मैत्री इस सोच की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यही कारण है कि आज का भारत 1962 का भारत नही है। मोदी की सरकार कांग्रेस की सरकार नही है। इस सरकार की विदेशपा नीति एकदम स्पष्ट है और वह है सर्वप्रथम भारत हित। चीन के राष्ट्रपति भारत के प्रधानमंत्री से कई बार मिल चुके हैं।

चीन की चाल क्या ?

भारत के संदर्भ में चीन के पूरे सामरिक परिदृश्य में तिब्बत धुरी है। तिब्बत चीन के लिए दंत श्रृंखला के रूप में काम करता है। यह बात माओं त्सेतुंग ने कही थी। इसी के प्रकाश में पिछले कुछ समय से चीन–भूटान सीमा विवाद को लेकर उभरी चीन की बौखलाहट देखी जानी चाहिए।

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । –

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com